विद्यार्थी हस्तपुस्तिका

बाइबल पर एक नजर

2

परमेश्वर के वचन का परिचय

नजसअ

नए जीवन के लिए सामूहिक अध्ययन

बाइबल पर एक नजर

परमेश्वर के वचन का परिचय

डेविड बेट्टी

विद्यार्थी हस्तपुस्तिका

5वाँ संस्करण

नजसअ
नए जीवन के लिए सामूहिक अध्ययन

बाइबल पर एक नजर
परमेश्वर के वचन का परिचय
विद्यार्थी हस्तपुस्तिका
डेविड बेट्टी
5वाँ संस्करण

इस पाइ्यक्रम में बाइबल के सारे संदर्भ निम्नलिखित हिन्दी बाइबल से लिये गये हैंः

IBP Bible (Machhli Bible)

Copyright © 2020, Teen Challenge USA.

मूलतः ये पाठ्यक्रम अंग्रेज़ी भाषा में प्रकाशित हुआ था *A Quick Look at the Bible, 5th Ed.*

इन सामग्रियों को टीन चैलेंज, स्थानीय कलीसियाओं, अन्य संगठनों और व्यक्तियों के द्वारा समान कार्यक्रमों के उपयोग के लिए पुनः उत्पादित और वितरित किया जा सकता है। इन सामग्रियों को इंटरनेट से भी निम्न वेबसाइट में से डाउनलोड भी किया जा सकता हैः www.iTeenChallenge.org परंतु इन सामग्रियों को प्रकाशित करने और बेचने के इच्छुक लोगों को ग्लोबल टीन चैलेंज से लिखित अनुमति लेनी होगी।

ये पुस्तिका नये मसीहियों के लिए सामूहिक अध्ययन नामक पाठ्यक्रम का हिस्सा है। यह पाठ्यक्रम कलीसियाओं, विद्यालयों, जेल सेवकाईयों एवं अन्य सेवकाईयों में नये विश्वासियों के बीच उपयोग करने के लिये तैयार किया गया है। इस पाठ्यक्रम के लिये शिक्षक हस्तपुस्तिका, विद्यार्थी हस्तपुस्तिका, अध्ययन सहायक पुस्तिका, परीक्षा पत्र एवं प्रमाणपत्र भी उपलबध है। इस पाठ्यक्रम के बारे में अधिक जानकारी पाने के लिये संपर्क करें

Global Teen Challenge
P.O. Box 511
Columbus, GA, 31902 USA
Email: gtc@globaltc.org
Web.: www.globaltc.org, www.iteenchallenge.org

Teen Challenge India
Emaar Central Plaza
No.28, 3rd Floor, Sector 105
Mohali, Punjab 140307 India
Email: samson@bombayteenchallenge.org

नएसअ
नए जीवन के लिए सामूहिक अध्ययन

पिछले संसोधन की तिथि: 11-2020

विषय सूची

परिचय 4

अध्याय 1 - बाइबल के बारे में सामान्य जानकारी 5

क. बाइबल के बारे में बुनियादी तथ्य 5

ख. बाइबल की एकता 6

ग. सम्पूर्ण तस्वीर (प्रगतिशील प्रकाशन) 6

घ. मसीह पूरी बाइबल में योग्य कैसे बैठता है 7

ड़. वर्षों की गिनती कैसे की गई 8

अध्याय 2 - बाइबल कैसे लिखी गई 9

क. प्रेरणा - इसका अर्थ 9

ख. परमेश्वर ने मनुष्य को बाइबल की पुस्तकें लिखने की प्रेरणा कैसे दी 10

ग. हमें बाइबल किस प्रकार दी गयी 12

अध्याय 3 - मैं कैसे पता करूँ कि बाइबल सही है 13

अध्याय 4 - पुराने नियम पर एक नजर 18

अध्याय 5 - नये नियम पर एक नजर 20

परिचय

लोग अक्सर पूछते हैं, ''मैं बाइबल का अध्ययन क्यों करूँ'' यह पुरानी हो चुकी है जिसे 2000 वर्ष पहले लिखा गया था। ये बाइबल आज मेरी समस्याओं में मेरी सहायता कैसे कर सकती है?

क्या हम इन प्रश्नों के उत्तर पा सकते हैं?

बाइबल में जीवन का उद्देश्य, जीवन का आरंभ जैसे प्रश्नों के उत्तर है जिन्हे आज मनुष्य खोज रहा है। बाइबल हमें बताती है कि हम कौन हैं, हमारा उद्देश्य क्या है, हमारी समस्याओं की जड़ क्या है, और इन सारी समस्याओं का समाधान क्या है?

इस पाठ्यक्रम में हम संपूर्ण बाइबल पर नजर डालेंगे कि यह क्या है, इसे किसने लिखा, यह हमें कैसे मिली?

इस पाठ्य श्रंखला में अध्ययन सहायक पुस्तिका को इसलिए बनाया गया कि आप स्वयं नये ओर पुराने नियम को समझ सकें। हम चाहते हैं कि आप डेविड फाँट की पुस्तिका 'अपनी बाइबल को समझें' को पढ़ें जिसमें बाइबल की 66 पुस्तकों के बारे में बड़े अच्छे तरीके से समझाया गया है।

अध्याय 1
बाइबल के बारे में सामान्य जानकारी

क. बाइबल के बारे में बुनियादी तथ्य

1. बाइबल में कितनी किताबें हैं

पुराने नियम की 39 पुस्तकें

नये नियम की 27 पुस्तकें

संपूर्ण बाइबल की 66 पुस्तकें

2. बाइबल की 66 पुस्तकों को कितने व्यक्तियों ने लिखा

लगभग 40 व्यक्तियों ने बाइबल की इन पुस्तकों को लिखा है। इन लेखकों की पृष्ठभूमियाँ अलग.अलग थीं। इनमें किसान, राजा, मछुआरे, धर्म प्रचारक, चिकित्सक, चरवाहे और सरकारी अधिकारी भी शामिल थे।

3. बाइबल को लिखने में कितना समय लगा

बाइबल को लगभग 1500 साल के अंतराल में लिखा गया था। सबसे पहले लिखी जाने वाली पुस्तक अय्यूब की पुस्तक थी जिसकी सही तारीख मौजूद नही है, परंतु संभवतः यह पुस्तक 1500 ईसा पूर्व में लिखी गई थी। बाइबल की अंतिम पुस्तक संभवतः प्रकाशितवाक्य है जो लगभग 100 ईस्वी सन् में लिखी गयी थी। नये नियम

की सारी पुस्तकें यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के बाद के 75 वर्षों के अंदर लिखी गयी हैं।

4. मूलतः बाइबल किन भाषाओं में लिखी गई थी?

पुराना नियम इब्री भाषा में लिखा गया था जिसमें से कुछ हिस्से अरामी भाषा में लिखे गए थ।

नया नियम यूनानी भाषा में लिखा गया था।

पुराना नियम इब्री भाषा में इसलिए लिखा गया था क्योंकि जिस समय ये पुस्तकें लिखी जा रही थींए उस समय इस्राएल की आम भाषा इब्री थी।

परंतु नये नियम की पुस्तकों के लिखे जाने के समयए वहाँ की आम भाषा इब्री नहीए परंतु यूनानी थी और इसीलिए नये नियम की पुस्तकों को यूनानी भाषा में लिखा गया था।

ख. बाइबल की एकता

बाइबल के बारे में एक बात आश्चर्यजनक है कि इसकी सभी 66 पुस्तकें एक दूसरे के साथ मेल खाती हैं। बाइबल की इस एकता को सर्वश्रेष्ठ तरीके से इस प्रकार समझाया जा सकता है कि इसका रचयिता स्वयं परमेश्वर है। परमेश्वर ने ही विभिन्न लोगों अथवा लेखकों इसे लिखने के लिए निर्देशित किया।

बाइबल की सभी 66 पुस्तकें हमारे लिए परमेश्वर का संपूर्ण अभिलेख है। बाइबल में हम वो सभी जानकारी पा सकते हैं जो कि एक अच्छा मसीही बनने ओर एक विजयी मसीही जीवन जीने के लिए हमें पता होनी चाहिए।

ग. सम्पूर्ण तस्वीर (प्रगतिशील प्रकाशन)

बाइबल में सिखायी जाने वाले बातों के बारे में उचित एवं सही जानकारी पाने के लिए जरूरी है कि हम इसकी संपूर्ण तस्वीर देखें। यहाँ, वहाँ से बाइबल के वचन का उल्लेख कर, हम कह नहीं सकते हैं कि बाइबल उक्त शिक्षा का समर्थन करती है।

उदाहरण के तौर पर, भजन संहिता 14:1 कहता है, "...कोई परमेश्वर है ही नहीं'', परंतु बाइबल में ही, अन्य जगहों पर (सर्वप्रथम, उत्पति 1:1 से) लिखा गया है कि परमेश्वर है।

भजन संहिता 14:1 का यह भाग, ''परमेश्वर है'' को बताने वाले बाइबल के अन्य भागों का खण्डन नहीं करता है। हमारी परेशानी यह है कि हमारे पास संपूर्ण कहानी नहीं है, हमारे पास सारे वचन नहीं हैं। जब हम सारे वचन पढ़ते हैं, तब हमें सही अर्थ समझ में आता है कि भजन संहिता 14:1 में ''मूर्ख, अपने मन में कहता है कि कोई परमेश्वर नहीं है।''

किसी भी विषय पर, हमें अपने अंतिम निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले, बहुत ही सावधान रहने की आवश्यकता है कि बाइबल इसके बारे में क्या कहती है। संपूर्ण बाइबल में से, हर एक पुस्तक, अध्याय और वचन को जोड़कर देखना महत्वपूर्ण है।

बाइबल 1500 वर्ष की अवधि मे लिखी गई। समय के साथ साथ, परमेश्वर स्वयं को हम पर अधिक प्रकट करता गया और बताया कि वो क्या चाहता है कि हम अपना जीवन कैसे जीएँ। बाइबल की हर पुस्तक हमें परमेश्वर के बारे में बताती है।

एक मुख्य विषयए जिसकी चर्चा बाइबल में की गई है और जिसे हम उदाहरण के तोर पर देख सकते हैं और वह है, प्रगतिशील प्रकाशन जिसका अर्थ है, समय के साथ साथ, अधिकाधिक जानकारी के खुलासे की प्रक्रिया।

घ. मसीह पूरी बाइबल में योग्य कैसे बैठता है

बाइबल में यीशु मसीह प्रमुख व्यक्ति हैं। संपूर्ण बाइबल यीशु मसीह के जीवन पर केन्द्रित है। पुराना नियम यीशु मसीह के आने की राह देख रहा है कि यह वही है जो आएगा और पापों से छुटकारा (उद्धार) देगा।

नये नियम की सारी पुस्तकें यीशु मसीह के स्वर्ग चले जाने के बाद लिखी गई थीं। यह नियम उस समय के बारे में बताता है जब वे इस पृथ्वी पर थे। यह हमें इसके बारे में भी बताती है कि हम यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए स्वयं को किस प्रकार तैयार करें।

बाइबल में लिखी सबसे महत्वपूर्ण घटना यीशु मसीह का पुनरूत्थान है। वे पृथ्वी पर आये, यहाँ पले बढ़े, हमारे बीच में रहे, हमें सिखाया और व्यक्तिगत रूप से दिखाया कि हम मसीही जीवन कैसे जी सकते हैं और वे हमारे पापों के लिए मरे।

परंतु उन सबसे महत्वपूर्ण व, वे मुर्दों में से जी उठे। हमारे पास एक जीवित परमेश्वर की सेवा करने का अवसर है। वे मरे हुएनहीं हैं।

ड़. वर्षों की गिनती कैसे की गई

बाइबल को लिखे जाने के दिनों मेंए लोग वर्षों की गिनती आज की तरह नहीं किया करते थे। बहुत सारे देश अपने वर्षों की गिनती अपने राजाओं के शासन की शुरूआत के आधार पर किया करते थे। वे किसी प्रमुख घटना की शुरूआत को जोड़कर गिनती हुआ करती थे।

इससे संबंधित एक उदाहरण पुराने नियम में हमारे पास है जब सुलैमान राजा था। (1 राजा 6:1) यह पद हमें दिखाता है कि उस समय इस्राएल में वर्षों की गिनती के ये दोनों तरीके उपयोग में लाये गए। हर देश का वर्षों को गिनने का अपना एक तरीका होता था।

यीशु मसीह के पैदा होने के सैंकड़ों साल बाद, वर्ष गिनने की प्रणाली समाप्त हो गई थी। गिनती करने की यह प्रणाली आज दुनिया के लगभग हर देश में उपयोग में लायी जाती है।

सन् 2020 का अर्थ है, यीशु मसीह के जन्म के 2020 वर्ष बाद। यीशु मसीह के जन्म के पहले के वर्षों को पीछे की ओर गिना जाता था। उदाहरण के लिए, पुराने नियम की अंतिम पुस्तक मलाकी, 400 ईसा पूर्व अर्थात यीशु मसीह के जन्म से 400 साल पहले लिखी गयी थी। मूसा ने उत्पति की पुस्तक को लगभग 1500 ईसा पूर्व अर्थात यीशु मसीह के जन्म के 1500 वर्ष पहले लिखा था।

अध्याय 2
बाइबल कैसे लिखी गई

क. प्रेरणा -- इसका अर्थ

इसका कथन का क्या अर्थ है कि बाइबल परमेश्वर द्वारा प्रेरित है, इसके अर्थ को हम कैसे समझ सकते हैं, बाइबल में तीन पद इस विषय पर विशेष रूप से चर्चा करते हैं। (2 तिमुथियुस 3:16, 2 पतरस 1:20-21)

2 तिमुथियुस 3:16

हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, और उपदेश देने, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभादायक है।

यह पद हमें दिखाता है कि परमेश्वर से प्रेरित होने का अर्थ क्या हैः

1. बाइबल परमेश्वर ने हमें दी है।
2. पवित्रशास्त्र को परमेश्वर ने श्वास दी है और उसी के द्वारा वह जीवित हुआ।

नीचे दिया गया वचन हमें दो बातें और बताता है जिससे हमें, परमेश्वर से प्रेरित, होने के अर्थ को समझने में सहायता मिलती है। वे किसी किताब के मरे हुए शब्द नहीं हैं। जब आप परमेश्वर के वचनों को स्वीकार करते, उन्हें अपने जीवन व कार्यों में प्रयोग करते हैं, तो परमेश्वर का वचन हमारे जीवन में आता और हमें बदलता है।

2 पतरस 1:20-21 इसे समझने के लिये दो और बातें बताता है कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।

2 पतरस 1:20-21

परंतु पहले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्तजन पवित्रात्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

3. बाइबल का कोई भी भाग मनुष्य ने नहीं बनाया।
4. उन लेखकों ने वही कहा, और लिखा, जो पवित्रात्मा ने उन्हे बताया।

जिसे हम कहते हैं कि बाइबल परमेश्वर से प्रेरित है:

पवित्रात्मा ने लेखकों के विचारों का मार्गदर्शन किया और उन्होंने वही लिखा जो परमेश्वर उनसे चाहता था।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि संपूर्ण बाइबल परमेश्वर से प्रेरित है। सारी पुस्तकें समान रूप से परमेश्वर द्वारा प्रेरित की गयी हैं। परमेश्वर ने बाइबल की किसी भी पुस्तक को किसी एक से अधिक प्रेरित नहीं किया। सारी पुस्तकें एक समान हैं।

ख. परमेश्वर ने मनुष्य को बाइबल की पुस्तकें लिखने की प्रेरणा कैसे दी

1. परमेश्वर ने उन्हे लिखने के लिए एक एक शब्द नहीं बताये (अधिकाँश परिस्थितियों में)

उन्होंने बैठे बैठे कोई बड़ी वाणी नहीं सुनी थी कि परमेश्वर यह कहता है, यशायाह की पुस्तक, चौथा अध्याय कहता है। बाइबल में कुछ स्थितियाँ हैं जहाँ परमेश्वर ने लेखकों से सटीक शब्द कहे थे, उदाहरणतः मूसा को दी गई दस आज्ञाएँ।

2. परमेश्वर ने उनके हाथों को यंत्र की तरह उपयोग नहीं किया

परमेश्वर ने इन लेखकों को बाइबल की पुस्तकें लिखने के लिए सम्मोहित करके निर्देश नही दिए थे। परमेश्वर ने इन मनुष्यों को यंत्र नहीं बनाया। उनको सब कुछ पता था कि वे क्या कर रहे हैं।

3. पवित्रात्मा ने उन्हें अपने विचार दिए जिनका वर्णन इन लेखकों ने अपने तरीके से किया।

बाइबल की सभी पुस्तकें परमेश्वर का वचन है जिसे लेखकों की अपनी शैली में लिखा गया है।

परमेश्वर ने विभिन्न प्रकार के लोगों को बाइबल की पुस्तकें लिखने के लिए चुना। इनमें से कुछ शिक्षित, तो कुछ अशिक्षित थे। परमेश्वर ने इन लोगों को, वे जैसे थे, वैसे ही बाइबल की एक या अधिक पुस्तकें लिखने के लिए उपयोग किया गया। बाइबल की पुस्तकों में आप विभिन्न प्रकार की लेखनशैली को देख सकते हैं, कुछ बहुत ही सरल, कुछ बहुत ही पेचीदा, तो कुछ बहुत ही विद्वत्तापूर्ण।

इन लोगों ने वही लिखा जो परमेश्वर चाहता था। ये सब परमेश्वर से प्रेम करते और उसके पीछे चलते थे, पर ये निपुण नहीं थे। फिर भी हम आश्वस्त हो सकते हैं कि बाइबल सच है, यह त्रूटिपूर्ण अथवा गलतियों से भरी हुई नहीं है। क्यों, क्योंकि यह कार्य परमेश्वर के संचालन में हुआ है और परमेश्वर गलत काम नहीं करता है। बाइबल मनुष्य के लिए परमेश्वर का संदेश है। इसमें सब कुछ सच है ओर यही सत्य है। यीशु मसीह यूहन्ना 17 की अपनी प्रार्थना में इस बात को स्पष्ट करते हैं।

यूहन्ना 17:17

सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है।

ग. हमें बाइबल किस प्रकार दी गयी

1. पहली बार पुस्तकें किस प्रकार लिखी गईं थी

हजारों वर्ष पहले, जब बाइबल की पुस्तकें लिखी गयीं थीं, उस समय आज की तरह कागज़ नहीं हुआ करते थे। इसलिए बाइबल की पुस्तकों के लेखकों ने जानवरों की खाल (चमड़े) पर इन्हे लिखा और एक साथ जोड़कर रखा जाता था। इनको चर्मपत्र कहते हैं।

उस समय में छपाई यंत्र या कम्प्यूटर नही होते थे, इसलिए उस समय सारी पुस्तकें हाथों से लिखी गईं थीं।

बाइबल की मूलप्रतियाँ आज उपलब्ध नहीं हैं परंतु आज बाइबल की अलग.अलग पुस्तकों की हजारों प्रतियाँ उपलब्ध हैं। ये प्रतियाँ इनके पहली बार लिखने के 100 वर्षों के अंदर ही बना ली गयी थीं।

2. बाइबल की पुस्तकों की प्रतियाँ कैसे बनी

इन पुस्तकों की सारी प्रतियाँ हाथों के द्वारा बनायी गई थीं। पुराने नियम में लोगों के पास प्रतियाँ बनाने का व्यवसाय हुआ करता था। इन पुस्तकों की प्रतियाँ बनाने के नियम बहुत ही कड़े हुआ करते थे। कोई भी गलती माफ नही होती थी। यदि कोई छोटी सी भी गलती करता तो उसके पूरे काम को फेंक दिया जाता था और उसे ही, वही काम शुरू से फिर करना होता था। ये कड़े नियम बड़े ही बहुमूल्य साबित हुए क्योंकि इसी कारण, बाइबल की सच्चाई को आज तक रखा जा सका।

बाइबल की बहुत सारी हस्तलिखित पुस्तकें आज भी उपलब्ध हैं। इनमें से कुछ प्रतियाँ यीशु मसीह के जन्म के 100 से 200 वर्ष पहले बनाई गई थीं। बाइबल की ये प्रतियाँ बहुत बहुमूल्य थीं (आज भी हैं)। हिन्दी भाषा की सभी पुस्तकों का अनुवाद तमिल भाषा से हुआ था।

अध्याय 3

मैं कैसे पता करूँ कि बाइबल सही है

बाइबल दो से तीन हजार वर्ष पहले लिखी गई थी। आज हम कैसे पता करें कि बाइबल सही और सत्य है, कैसे पता चले कि बाइबल में कोई बदलाव नहीं हुआ है, संभवतः यह गलतियों से भरी हुई हो। कैसे भरोसा करें कि लोगों ने इसके साथ कोई छेड़छाड़ या बदलाव नहीं किया!!!

बहुत से स्थानों पर हमें यह बताने वाले ठोस सबूत मिलते हैं कि आज जो बाइबल हमारे पास है, वह सही, त्रूटिरहित और सत्य है। हम विश्वास कर सकते हैं कि यह गलतियों से भरी हुई नहीं है।

क. सभी भविष्यद्वाणियाँ सही और सत्य हुई हैं

सामान्य तौर पर, भविष्यद्वाणी शब्द की दो परिभाषाएँ होती हैंः

1. एक मसीही के द्वारा कहा गया परमेश्वर का संदेश
2. भविष्यद्वाणीः परमेश्वर का संदेश जो बताता है कि भविष्य में क्या होगा

बाइबल हजारों भविष्यद्वाणियों से भरी हुई है। उत्पत्ति की किताब के तीसरे अध्याय से लेकर अन्तिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य तक परमेश्वर ने हमें संदेश और भविष्यवाणियाँ दोनो दी हैं। और उनमें से एक भी भविष्यवाणी गलत साबित नहीं हुई है। बाइबल में लिखी बहुत सारी भविष्यवाणियों में यीशु मसीह के पहली बार इस संसार में आने के बारे में बताया गया है और जैसा परमेश्वर ने कहा था, ये सारी भविष्यवाण्यिाँ सच हुईं।

यशायाह 53 और भजन संहिता 22 में यीशु मसीह के बारे में भविष्यवाणी की गयी है। मत्ती 5:17-18, यिर्मयाह 28:9 और लूका 21:24 भी पढ़ें

आज भी ऐसी बहुत सी भविष्यवाणियाँ है जिनका पूरा होना अभी बाकी है। इनमें से बहुत कुछ यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बारे में हैं। जैसा हमने देखा कि पुरानी सारी भविष्यवाणियाँ पूरी हुईं हैंए तो हम यह भी विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वरए यीशु मसीह के दूसरे आगमन की भविष्यवाणियों को भी पूरा करेंगे।

ख. बाइबल कहती है कि यह परमेश्वर का वचन है

बाइबल के लेखकों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि यह परमेश्वर का वचन है। परमेश्वर ने उनका मार्गदर्शन किया और उन्हे बताया कि क्या लिखना है। इन लेखकों ने जो कुछ भी लिखा, उसका श्रेय पूरा परमेश्वर को जाता है।

2 तिमुथियुस 3:16 2 पतरस 1: 20-21

ग. यीशु मसीह ने कहा कि बाइबल परमेश्वर का वचन है

यीशु मसीह ने अपने जीवन में कई बार स्पष्ट रूप से कहा है कि बाइबल सत्य है ओर यह परमेश्वर का वचन है। यीशु मसीह ने बाइबल की शिक्षाओं को प्रतिदिन अपने जीवन में लागु करए इस पर अपना पूरा भरोसा दिखाया।

यूहन्ना 17:17

यूहन्ना 10:35

मत्ती 5:17-18

यदि बाइबल परमेश्वर का वचन नहीं है और यदि यह सत्य नहीं है तो यूहन्ना 17:17 में यीशु मसीह ने झूठ कहा था। और यदि यीशु मसीह ने झूठ कहा था तो इसका अर्थ है कि उन्होंने पाप किया है। यदि यीशु ने पाप किया है तो क्रूस पर उसकी मृत्यु किसी भी मायने में हमारे पापों का दण्ड नहीं चुका सकती। निम्न वचनों को पढ़ें ओर देखें कि ये यीशु के जीवन के बारे में क्या कहते हैः

इब्रानियों 4:15

इब्रानियों 5:8-9

1 पतरस 3:18

घ. बाइबल में कोई अंतर्विरोध (प्रतिवाद) नहीं है

अंतर्विरोध क्या है

जब कोई भी दो कथन स्वयं को सत्य कहते परंतु एक दूसरे के विपरीत होते हैं तो इसका मतलब है कि उनमें से कोई एक सत्य है और दूसरा संभवतः गलत है। उदाहरण के तौर पर, प्रतिवाद का अर्थ देखें - *एक कुत्ता मर चुका है। एक कुत्ता जीवित है।* यदि एक सच है तो दूसरा गलत। ये दोनों एक समय पर सच नहीं हो सकते हैं।

बाइबल में अंतर्विरोध नही है। यह एक जगह पर किसी चीज को सच, दूसरी जगह पर उसी चीज को झूठ नही कहती है। बाइबल एक स्थान पर यह कहकर कि परमेश्वर जीवित है, दूसरे स्थान पर यह नही कहती है कि वह मरा हुआ है। कई स्थानों पर ऐसा लगता है कि बाइबल में अंतर्विरोध है। परंतु यह वचन की सही जानकारी नही होने के कारण होता है। कई बार लोग वचन के एक दो पदों का वर्णन करके, उसके सारे संदेश का अर्थ ही बदल देते हैं।

बाइबल के अंदर जबरदस्त समानता है। पूरी बाइबल एक संगठित संदेश देती है और यह तभी संभव है जब इसका लेखक भी एक हो। और वो लेखक परमेश्वर है जिसने बाइबल की 66 पुस्तकों को लिखने के निर्देश दिए। अतः बाइबल में कोई अंतर्विरोध (प्रतिवाद) नहीं है।

ड़. पुरातत्वशास्त्र साबित करता है कि बाइबल सच है

पुरातत्व के अध्ययन से यह साबित होता है कि बाइबल सत्य है। पुरातत्व क्या है। एक शब्दकोष इसकी ये परिभाषा बताता हैः विज्ञान और अध्ययन के द्वारा इतिहास के पन्नो में छुप चुके भवनों और शहरों के बारे में जानकारी पाना। (दि कोर्टिस वाटर्स इलस्ट्रेट्ड गोल्डन डिक्सनरी फोर यंग रीडर्स, गोल्डन प्रेस, न्यूयॉर्क)

1. पुरातत्वविदों ने उस समय के शहरों का अध्ययन एवं शोध करने में बहुत सारे वर्ष बिताये जब बाइबल लिखी गयी थी।

पुरातत्व की खोजों के बारे में सैंकड़ों पुस्तकें लिखी गयी हैं, परंतु बाइबल के बारे में एक भी तथ्य गलत नहीं मिला है। एक भी व्यक्ति यह सिद्ध नहीं कर पाया है कि बाइबल में लिखा हुआ कोई भी तथ्य किसी शहर, राजा या रिवाज के बारे में गलत है।

2. मृतसागर चर्मपत्र यह साबित करते हैं कि बाइबल सच है

मृतसागर चर्मपत्रों की खोजबीन 20वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्वीय खोजों में से एक है। मृतसागर चर्मपत्र 1947 में खोजे गए थे जो आज इस्राएल राष्ट्र का हिस्सा है। इन चर्मपत्रों में पुराने नियम की एक पुस्तक के अलावा सभी पुस्तकों की प्रतियाँ हैं जिनमें से कई चर्मपत्र, यीशु मसीह के जन्म से लगभग 100 से 200 वर्ष पहले लिखे गये थे। पुराने नियम की इन पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ, पुराने नियम की किसी भी अन्य ज्ञात प्रतिलिपियों से 1000 वर्ष पुरानी हैं।

जब इन मृतसागर चर्मपत्रों की बाइबल से तुलना की गयी तो कोई अंतर नहीं मिला। मृतसागर चर्मपत्र एक विश्वसनीय सबूत है कि बाइबल सच है। ये चर्मपत्र हमें ठोस सबूत देते हैं कि जो बाइबल आज हमारे पास है, उसमें वही लिखा है जैसा पहले लिखा गया था।

छ. चिकित्सा पद्धतियों से साबित होता है कि बाइबल सही है

वर्तमान चिकित्सा पद्धति के अनुसार बाइबल में दिए गए चिकित्सा निर्देश सही साबित हुये हैं। एक मेडिकल चिकिस्तक, एस. आई. मैक्मिलन ने अपनी पुस्तक, *नन ओफ दिस डिसीज़* में बाइबल के चिकित्सकीय नियमों की चर्चा की और आधुनिक चिकित्साशास्त्र से की गई तुलना के आधार पर साबित किया कि ये कितने सही हैं।

ज. बाइबल की शिक्षाओं का अपने जीवन में परीक्षण करके अपने आपको यह साबित करें कि यह सही है

यदि बाइबल की शिक्षाएँ सच हैं और जब आप उन्हें अपने जीवन में लागु करते हैं तो आपका जीवन बदलने लगता है। और यदि बाइबल सच नही है तो इसको लागु करने से आपके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं होता।

अनगिनत लोगों ने यह महसूस किया है। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अपने निजी जीवन में बाइबल की शिक्षाओं का परीक्षण कर साबित किया है कि वे सच हैं। बाइबल में भी हम ऐसे कई लोगों के उदाहरण पाते हैं जिन्होंने अपने जीवन में यह साबित किया है कि परमेश्वर की शिक्षा सही है।

मरकुस 16:20

और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को द्रढ़ करता रहा।

बहुत ही आश्चर्यजनक तरीके से बाइबल की सच्चाई को सिद्ध किया जा सकता है जब हम इसकी शिक्षाओं को अपने जीवन में सिद्ध करते हैं।

मलाकी 3:10

कुलुस्सियो 1:5-6

यूहन्ना 7:16-17

अध्याय 4

पुराने नियम पर एक नजर

बाइबल के दो भाग हैं जिन्हे *नियम* कहते हैं। नियम एक वाचा, सन्धि अथवा प्रतीज्ञापत्र है। बाइबल हमारे लिए परमेश्वर का प्रतीज्ञापत्र है।

पुराना नियम यहूदियों को दिया गया था जिसमें उत्पत्ति से लेकर यीशु मसीह के पैदा होने के लगभग 400 वर्ष पहले तक की बातें लिखी हैं। यह यीशु मसीह के आने से पहले परमेश्वर ओर लोगों के बीच के संबंध को बताती है। बाइबल का तीन चौथाई भाग पुराना नियम है जो मूल रूप से इब्री भाषा में लिखा गया था।

नये नियम में परमेश्वर हमें बताते हैं कि हमारे पास पुराना नियम क्यों दिया गया है।

1 कुरिन्थियों 10:11

परंतु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टांत की रीति पर थीं और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अंतिम समय में रहते हैं, लिखी गई हैं।

दो और विभिन्न वचन हमें बताते हैं कि परमेश्वर पुराने नियम को कितना मूल्य देते हैं:

2 तिमुथियुस 3:16-17

सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश देने, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने ओर हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।

इब्रानियों 4:12

क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव और आत्मा को, और गाँठ-गाँठ, और गूदे गूदे को अलग करके, आर-पार छेदता है, ओर मन की भावनाओं ओर विचारों को जाँचता है।

पुराने नियम की पुस्तकों की संक्षिप्त जानकारी पाने के लिए, *अपनी बाइबल को जानें (नो युवर बाइबल)* नामक पुस्तक पढ़ें। निम्नलिखित सूची पुराने नियम की पुस्तकों एवं उसके विभाजन को दिखाती हैः

पुराने नियम के पाँच विभाजन

मूसा की पुस्तकें
उत्पति
निर्गमन
लैव्यव्यवस्था
गिनती
व्यवस्थाविवरण

ऐतिहासिक पुस्तकें
यहोशु
न्यायियों
रूत
1 शमुएल
2 शमुएल
1 राजाओं
2 राजाओं
1 इतिहास
1 इतिहास
एज्रा
नहेम्याह
एस्तेर

काव्य पुस्तकें
अय्यूब
भजन संहिता
सभोपदेशक
श्रेष्ठगीत
श्रेष्ठगीत

बड़े भविष्यद्वक्ता
यशायाह
यिर्मयाह
विलापगीत
यहेजकेल
दानिय्येल

छोटे भविष्यद्वक्ता
होशे
योएल
आमोस
ओबद्याह
योना
मीका
नहूम
हबक्कुक
सपन्याह
हाग्गै
जकर्याह
मलाकी

अध्याय 5

नये नियम पर एक नजर

नये नियम की 27 पुस्तकें यीशु मसीह के जीवन और उनके स्वर्गारोहण के बाद की बातों के बारे में बताती हैं। अधिकतर पुस्तकें यीशु मसीह, उनके चेले और पौलुस की सेविकाई का वर्णन करती हैं।

नये नियम की पुस्तकों के बारे में संक्षिप्त जानकारी के लिए *अपनी बाइबल को जानें (नो युवर बाइबल)* नामक पुस्तक पढ़ें। निम्नलिखित सूची नये नियम की पुस्तकों एवं उसके विभाजन को दिखाती हैः

नये नियम के पाँच भाग

सुसमाचार

मत्ती

मरकुस

लूका

यूहन्ना

कलीसिया का इतिहास

प्रेरितों के काम

पौलुस की पत्रियाँ

रोमियों

1 कुरिन्थियो

2 कुरिन्थियों

गलातियों

इफिसियों

फिलिप्पियों

कुलुस्सियों

1 थिस्सलुनीकियों

2 थिस्सलुनीकियों

1 तिमुथियुस

2 तिमुथियुस

तीतुस

फिलेमोन

सार्वजनिक (आम) पत्रियाँ

इब्रानियों

याकूब

1 पतरस

2 पतरस

1 यूहन्ना

2 यूहन्ना

3 यूहन्ना

यहूदा

भविष्यवाणीय पुस्तक

प्रकाशितवाक्य